"दिव्य औषधि" सफेद मूसली की व्यावसायिक खेती

सफेद मूसली की खेती सम्पूर्ण भारतवर्ष में (ज्यादा ठंडे क्षेत्रों को छोडकर) सफलता पूर्वक की जा सकती है। सफेद मूसली को सफेदी या धोली मूसली के नाम से जाना जाता है जो लिलिएसी कुल का पौधा है। यह एक ऐसी "दिव्य औषधि" है जिसमें किसी भी कारण से मानव मात्र में आई कमजोरी को दूर करने की क्षमता होती है। सफेद मूसली फसल लाभदायक खेती है।

सफेद मूसली को अंगेजी में Chlorophytum borivilianum (क्लोरोफायटम बोरीविलीयेनम) कहा जाता है जो की प्रायद्वीपीय पौध है, भारत में उष्णकटीबंधीय, गीले जंगलो में प्राकृतिक रूप से पाये जाने वाली एक जड़ी बूटी है । इसे भारत के कुछ हिस्सो में एक पत्ती की सब्जी के रूप में खाया जाता है और इसकी जड़ो को भारतीय चिकित्सा में स्वास्थ्य टॉनिक के रूप में प्रयोग किया जाता है ।

सफेद मुसली एक महत्वपूर्ण रसायन तथा एक प्रभाव वाजीकारक औषधीय पौधा है। इसका उपयोग खांसी, अस्थमा, बवासीर, चर्मरोगों, पीलिया, पेशाब संबंधी रोगों, ल्यूकोरिया आदि के उपचार हेतु भी किया जाता है। हालांकि जिस प्रमुख उपयोग हेतु इसे सर्वाधिक प्रचारित किया जाता है। वह है- नपुंसकता दूर करने तथा यौनशक्ति एवं बलवर्धन। मधुमेह के उपचार में भी यह काफी प्रभावी सिद्ध हुआ है।

सफेद मूसली उगाने के लिए जलवायु

सफेद मूसली मूलतः गर्म तथा आर्द्र दोनों दशावो का और उस तरह के प्रदेशों का पौधा है। उंत्तरांचल, हिमालय प्रदेश तथा जम्मू-कश्मीर के ऊपर क्षेत्रों के साथ-साथ यह पौधा मध्य भारत, दक्षिण भारत, पूर्वी भारत, और साथ ही पश्चिम भारत में आसानी से और सफलता पूर्वक में यह सफलतापूर्वक उगाया जा सकता है।

ईसकी खेती के लिए पाणी की आवश्यकता अच्छी होती है, जैसे की सफेद मूसली 8-9 महीने की फसल है, उस दौरान इसको निरंतर पाणी जरूरी होता है। सफेद मूसली साधारणतः 15°c से 45°c तापमान में उगाया जा सकता है लेकिन इस पौधे के अच्छे विकास के लिए 20-35°c की आवश्यकता होती है ।

सफेद मूसली के खेत की तैयारी

सफेद मूसली 8-9 महीनें की फसल है जिसे मानसून में लगाकर फरवरी-मार्च में खोद लिया जाता है। अच्छी खेती के लिए यह आवश्यक हे कि खेतों की गर्मी में गहरी जुताई की जाय, अगर सम्भव हो तो हरी खाद के लिए ढ़ैचा, सनइ, ग्वारफली बो दें।

सफेद मूसली की खेती में भूमि की अच्छी तैयारी करने की आवश्यकता है, क्योंकि यह जमीन के अंदर होती है जिससे जमीन को अच्छी तरह से भुरभुरी बनाया जाना आवश्यक है। जमीन की 1.5 फुट गहरी जुटाई करें, उसमे जैविक खाद को समान मात्रा में फैलाए उसके बाद मिट्टी और खाद को मिलाए। और मिट्टी को बारीक/ भुरभुरा बनाएं।

मिट्टी में 2 फुट चौड़े बेड/ या मेड का निर्माण करे जिसकी ऊंचाई 1 फुट तक हो। सफेद मूसली के खेती में बेड के ऊपर ढकने के लिए प्लास्टिक की मलचींग शीट का उपयोग करने से खरपतवार निकालने के खर्चे में कमी या सकती है। उसके साथ ही सिंचाई के लिए बूंद- बूंद सिंचाई यानि ड्रिप इरगैशन सिस्टम के इस्तेमाल से काफी मात्रा में पनि की एंव खर्चे की बचत के साथ साथ उत्पादन में भी 15-25% बढ़ोतरी देखि गई है।

खाद एंव उर्वरक

सफेद मूसली की खेती में जैविक खादों एंव उर्वरकों का इस्तेमाल करना चाहिए, जैविक खाद जैसे की-

- **केचुवे का खाद/ वर्मिकोमपोस्ट** : पौधे के लिए पोशाक तत्व प्रदान कर्ता है,
- **नीम की खली** : जमीन में उपस्थित किटकों को मारता है,
- **जिप्सम पाउडर** : जमीन को भुरभुरा रखने में मदद करता है, और
- **ट्रायकोडर्मा फफूंद नाशक पाउडर** : जो जमीन में उपस्थित हानिकारक फफूंद को मारने में उपयोगी होता है।

ये चारों खाद नीचे बताए गए विधि से जमीन तयार करते समय खेत में फैलाने है।

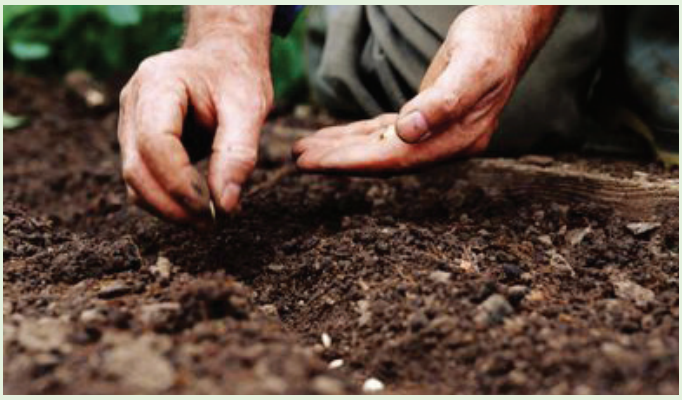

बीज उपचार एवं रोपण

250 किलोग्राम बीज या 30000 ट्यूबर्स प्रति ऐकर की दर से बीज की अवश्यकता पड़ती है। बुवाई के पहले बीज का उपचार रासायनिक एवं जैविक विधि से करते हैं । रासायनिक विधि में वेविस्टीन के 0.1 प्रतिशत घोल में ट्यूबर्स को उपचारित किया जाता है।

जैविक विधि से गोमूत्र एवं पानी (1:10) में 10 से 15 मिनट तक ट्यूबर्स को डुबोकर रखा जाता है। बुआई के लिये गड्ढे बना दिये जाते हैं। गड्ढे की गहराई उतनी होनी चाहिए जितनी बीजों की लम्बाई हो, बीजों का रोपण इन गड्ढों में कर हल्की मिट्टी डालकर भर दें ।

सफेद मुसली की सिंचाई एवं निकाई-गुड़ाई

रोपाई के बाद ड्रिप द्वार या खुला पाणी छोकड़े सिंचाई करें। बुआई के 7 से 10 दिन के अन्दर यह उगना प्रारम्भ हो जाता हैं। उगने के 75 से 80 दिन तक अच्छी प्रकार बढ़ने के बाद सितम्बर के अंत में पत्ते पीले होकर सुखने लगते हैं तथा 100 दिन के उपरान्त पत्ते गिर जाते हैं। फिर जनवरी फरवरी में जडें उखाड़ी जाती हैं।

सफेद मुसली की किस्में

सफेद मुसली की कई किस्में देश में पायी जाती हैं। उत्पादन एवं गुणवत्ता की दृष्टि से एम डी बी 13 एवं एम डी बी 14 किस्म अच्छी है। इस किस्म का छिलका उतारना आसान होता है। बस किस्म में उपर से नीचे तक जड़ो या टयूबर्स की मोटाई एक समान होती है। एक साथ कई ट्यूबर्स (2-50) गुच्छे के रूप में पाये जाते हैं।

मूसली बरसात में लगायी जाती है। नियमित वर्षा से सिंचाई की जरूरत नहीं पड़ती है। अनियमित मानसून में 10-12 दिन में एक सिंचाई दें। अक्टूबर के बाद 20-21 दिनों पर हल्की सिंचाई करते रहना चाहिए। मूसली उखाडने के पूर्व तक खेती में नमी बनाए रखें।

जल भराव अथवा आवश्यकता से अधिक सिंचाई के कारण जड़ों के गलन का रोग हो सकता है । इसकी रोकथाम के लिए आगे सिंचाई देना बंद करके तथा रूके हुए पानी को बाहर निकाल करके इस रोग पर काबू पाया जा सकता है।

सफेद मूसली में रोग और उपाय

फंगस के रूप में पौधों पर 'फ्यूजेरिम' का प्रकोप हो सकता हैं। जिसके उपचार हेतु ट्राइकाडर्मा बिरडी का उपयोग किया जा सकता है। दीमक से सुरक्षा हेतु नीम की खली का उपयोग सर्वश्रेष्ठ पाया गया है। एक सुरक्षा के उपाय के रूप में कम से कम 15 दिन में एक बार फसल पर गोमूत्र के घोल का छिड़काव अवश्य कर दिया जाना चाहिए। वैसे नियमित अंतरालों पर गौमूत्र अथवा नीम के तेल को पानी में मिश्रित करके उसका छिड़काव् करने से फसल पूर्णतया रोगों अथवा कीटों/कृमियों से मुक्त रहती है।

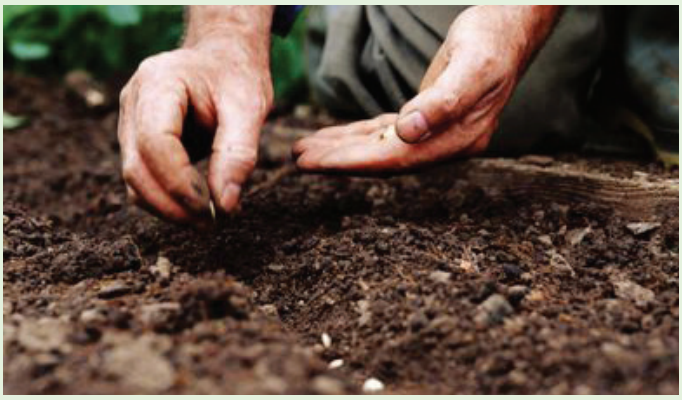

मूसली खुदाई (हारवेस्टिंग)

मूसली को जमीन से खोदने का सर्वाधिक उपयुक्त समय नवम्बर के बाद का होता है। जब तक मूसली का छिलका कठोर न हो जाए तथा इसका सफेद रंग बदलकर गहरा भूरा न हो तब तक जमीन से नहीं निकालें। मूसली को उखाडने का समय फरवरी के अंत तक है।

खोदने के उपरांत इसे दो कार्यों हेतु प्रयुक्त किया जाता हैः

1. बीज हेतु रखना य बेचना
2. इसे छीलकर सुखा कर बेचना

बीज के रूप में रखने के लिये खोदने के 1-2 दिन तक कंदो का छाया में रहने दें ताकि अतरिक्त नमी कम हो जाए फिर कवकरोधी दवा से उपचारित कर रेत के गड्ढों, कोल्ड एयर, कोल्ड चेम्बर में रखे।

सुखाकर बेचने के लिये फिंर्गस को अलग-अलग कर चाकू अथवा पीलर की सहायता से छिलका उतार कर धूप में 5-6 दिन रखा जाता है। अच्छी प्रकार सूख जाने पर बैग में पैक कर बाजार भेज देते है।

बीज या प्लान्टिंग मेटेरियल हेतु मूसली का संग्रहण

यदि मूसली का उपयोग प्लांटिगं मेटेरियल के रूप में करना हो तो इसे मार्च माह में ही खोदना चाहिए। इस समय मूसली को जमीन से खोदने के उपरान्त इसका कुछ भाग तो प्रक्रियाकृत (छीलकर सुखाना) कर लिया जाता है। जबकि कुछ भाग अगले सीजन मेंबीज (प्लांटिग मेंटेरियल) के रूप मेंप्रयुक्त करने हेतु अथवा बेचने हेतु रख लिया जाता है।

मूसली की खेती से उपज की प्राप्तिः यदि 2.5 क्विंटल बीज प्रति प्रति एकड़ प्रयुक्त किया जाए तो लगभग 20 से 24 क्विंटल के करीब गीली मूसली प्राप्त होगी। किसान का प्रति एकड़ औसतन 3- 3.5 टन गीली जड़ के उत्पादन की अपेक्षा करनी चाहिए। उनको छीलकर सुखाने से लगभग 80% वजन कम होता है इस तरह एक ऐकर में 600-700 किलोग्राम तक सुखी जड़े परत ऐकर हो सकती है।

मूसली की श्रेणीकरण

- "अ" श्रेणीः यह देखने में लंबी. मोटी, कड़क तथा सफेद होती है। दातों से दबाने पर दातों पर यह चिपक जाती है। बाजार में प्रायः इसका भाव 1000-1500 रू. प्रति तक मिल सकता है।
- "ब" श्रेणीः इस श्रेणी की मूसली "स" श्रेणी की मूसली से कुछ अच्छी तथा "अ" श्रेणी से हल्की होती है। प्रायः "स" श्रेणी में से चुनी हुई अथवा "अ" श्रेणी में से रिजेक्ट की हुई होती है बाजार में इसका भाव 700-800 रू. प्रति कि.ग्रा. तक (औसतन 500 रू. प्रति कि.ग्रा.) मिल सकता है।
- "स"श्रेणीः प्रायः इस श्रेणी की मूसली साइज में काफी छोटी तथा पतली एवं भूरे-काले रंग की होती हैं। बाजार में इस श्रेणी की मूसली की औसतन दर 200 से 300 रू. प्रति कि.ग्रा. तक होती है।

भारत सरकार की सब्सिडी

2022 तक सफेद मूसली के बाजार में लगभग 900 करोड़ रुपए की और बढ़ोतरी होने का अनुमान है। इसे देखते हुए नेशनल मेडिसिनल प्लांट्स बोर्ड (एनएमपीबी) ने किसानों को सफेद मूसली की खेती पर 20-30 फीसदी सब्सिडी देने की घोषणा की है। भारतीय कृषि विश्वविद्यालय के शोध में ये बात सामने आयी है कि सफेद मूसली की जड़ों में प्रोटीन व फाइबर अधिक मात्रा में होता है। कैल्शियम व फास्फोरस से भरपूर होने के साथ इन पत्तियों में कई तरह के खनिज भी होते हैं।

प्रति एकर कुल खर्चे

क्रमांक	ब्योरे	कार्य	खर्चे
1	जमीन तैयार करना	जुताई, समतल करना इ.	10,000
2	खाद	जैविक खाद	30,000
3	कंद	250 किलो जड़े @ रु 400 प्रतिकिलो	100,000
4	बुवाई	कंद जमीन में लगाना	3,000
5	टपकन सिंचाई		30,000
6	मल्चिंग शीट	शीट की कीमत और मेढ़ पर बिछाने की लागत	25,000
7	बिजली का बिल		2,000
8	खुदाई	जमीन से कंद निकालना	2,000
9	पोस्ट हार्वेस्ट खर्चे	कंद को छीलना, सुखाना और पॅकिंग	10,000
	संपूर्ण खर्च (8-9 महीने)		**2,12,000/-**

प्रति एकर कुल आय

क्रमांक	उत्पादन का ब्योरा	वजन (किलोग्राम)	बाय-बॅक कीमत प्रति किलोग्राम	कुल कीमत
1	सूखे कंद (प्रति एकड़)	600 किलोग्राम	रु. 800/-	रु. 4,80,000/-
2	बीज या प्लान्टिंग मेटेरियल (गीला वजन)	200 किलोग्राम	रु. 300/-	रु. 60,000/-
3	कुल आय			रु. 5,40,000/-
4	कुल खर्चे (प्रति ऐकर)			रु. 2,12,000/-
5	शुद्ध आय/ नफ़ा			रु. 3,28,000/-

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करे

मोबाइल : 97850-15005, 98875-55005, 81073-79410, 83291-99541, 96100-02243, 78919-55005

ईमेल : • atul.hcms@gmail.com, • info@iiaasd.com, • organic.naturaljpr@gmail.com, • info@sunriseagriland.com, sunriseagrilandb2b@gmail.com

वेबसाइट : • www.hcms.org.in, • www.iiaasd.com, • www.sunriseagriland.com

महत्वपूर्ण लिंक्स : • https://www.hcms.org.in/ofpai.php, • https://www.hcms.org.in/sunrise-organic-park.php • https://www.hcms.org.in/mai-hu-kisan.php • https://www.hcms.org.in/organic-maures-and-pesticides.php

Organic SUNRISE Natural™ · OFPAI · (IIAASD) · हैनीमैन चेरीटेबल मिशन सोसायटी · JKM Organic & Herbs Pvt. Ltd. · मैं हूं किसान · Sunrise Organic Park